वर्ष – 2009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 05-03-200

परीक्षा के नाम की सील: हाई स्कूल परीक्षा

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
T-1001	C

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्र.-681001

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

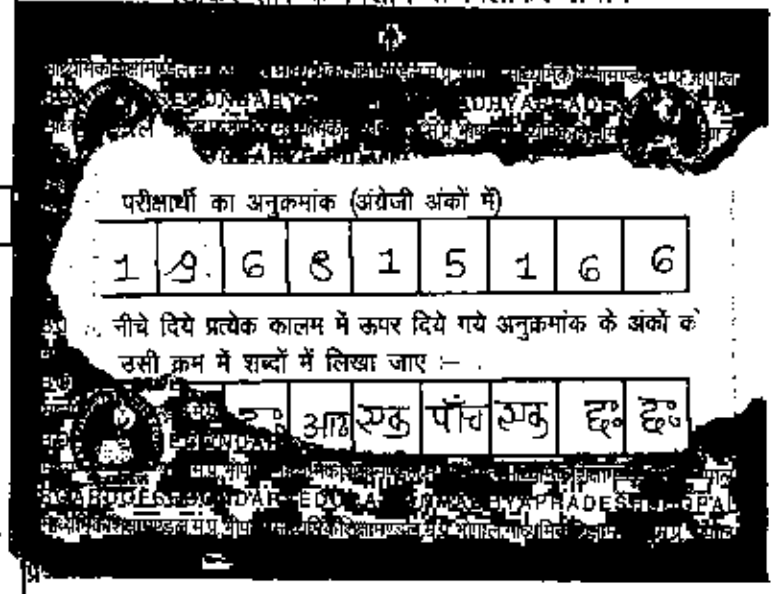

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

1	9	6	8	1	5	1	6	6

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

		आठ	एक	पाँच	एक	छः	छः

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में एक अंकों में 01

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक BL13 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) [हस्ताक्षर]

नाम M.K. Paukey पद Teacher

पता / संस्था MG Govt H.S.S. Harda

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

[हस्ताक्षर]

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका सहित यथास्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) [हस्ताक्षर] हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 734016 दिनांक........ दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन कैन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

प्रश्न क्रमांक - 1

(i) रामधारी सिंह दिनकर की कविता में ओज गुण है।
(ii) 'द्वैपायन कृष्ण' को देश महर्षि वेदव्यास के नाम से जानता है।
युधिष्ठिर की माता का नाम कुन्ती है।
जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कामायनी महाकाव्य है।
दिनेश शब्द का सन्धि-विच्छेद दिन + ईश है।

प्रश्न क्रमांक - 2

घनश्याम को राखी बाँधने वाली बहन का नाम है-
सरस्वती

सज्जन व्यक्ति से क्या पूछना चाहिए?
ज्ञान

पहली चूक पाठ में लेखक ने किसे केन्द्र बिन्दु बनाया है?
शिक्षितों को

मिट्टी के बर्तन बनाने वाले को कहते है
कुम्हार

एक दोहा तथा एक रोला मिलकर छन्द बनाते है-

BSEMP

पृष्ठ

कुण्डलियाँ

प्रश्न क्रमांक - 3

भगिनी निवेदिता स्वामी विवेकानन्द की शिष्या थी। सत्य

'मनोहर' शब्द में व्यञ्जन सन्धि है। असत्य

'करुण रस' का स्थायी भाव शोक है। सत्य

'पथ की पहचान' नामक कविता के कवि 'सूरदास' है। असत्य

'गुलाब' मनुष्य की मानसिक तृप्ति और सौन्दर्य बोध का प्रतीक है सत्य

प्रश्न क्रमांक - 4

नर्मदा	अमरकंटक
रातिकाल से चिर अभिशापित	चकवा-चकवी
तुर्की के राष्ट्रपति	महान कमालपाशा
बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करना	अतिशयोक्ति
श्वास - प्रश्वास	द्वन्द्व समास

प्रश्न क्रमांक -5

उत्तर① रक्षाबन्धन का पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

'आपका नाम बाजरा तो नहीं है' यह कथन लेखक ने मेढ़ पर खड़े व्यक्ति रामचरन से पूछा है।

श्रीकृष्ण के हृदय पर 'गुंजों' की माला शोभा पा रही है।

आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को 'संचारी भाव' कहते हैं।

जिस समास में पहला पद संख्यावाची होता है उस समास का नाम 'द्विगु समास' है।

प्रश्न क्रमांक - 6

इस संसार में जितनी भी हठ हैं, उनमें से बालहठ सबसे प्रसिद्ध है। बालहठ का सम्बन्ध बच्चों से होता है। तुलसीदास जी ने भी अपनी कविता में इस हठ का सजीव चित्रण किया है। तुलसीदास जी की कविता में शिशु राम को बाल हठ करते हुए बताया गया

है। शिशु राम का स्वभाव चंचल है। उनकी बाल-सुलभ चेष्टाएँ मन को आनन्दित करने वाली है। इन्हीं चेष्टाओं के अन्तर्गत बालक राम अपनी माता से चन्द्रमा माँगने की हठ करते है। चन्द्रमा बच्चों को प्रिय होता है उसी तरह बालक राम भी उसे खिलौना समझकर उसे प्राप्त करने की हठ करने लगते हैं।

इस हठ को तुलसीदास जी ने अपने काव्य में इस प्रकार चित्रित किया है, कि पाठक का मन गद्‌गद् उठे। इसी प्रकार शिशु राम जिस भी वस्तु की माँग करते है वह वस्तु उन्हें तत्काल ही चाहिए होती है। वस्तु के न मिलने पर वे क्रोधित होकर रोने लगते है। उनकी इन्हीं हठों को देखकर माताएँ आनन्दित होती है इन्होंने लिखा है

कबहुँ ससि माँगत आरि करैं।

प्रश्न क्रमांक- 7-

उद्बोधन कविता में कवि ने व्यक्ति को स्वाभिमान-पूर्वक जीवन जीने की सलाह दी है स्वाभिमानी व्यक्ति ही वीरता, स्वतंत्रता का वरण कर सकता है। कवि कहते है कि

जब व्यक्ति के अहं पर चोट लगती है, तो वह उस चोट से घबराता नहीं है, अपितु उस अहं से भी किसी बड़ी चीज की वह अपने अन्दर उत्पत्ति कर लेता है ताकि वह चोट उस व्यक्ति के आत्मबल को कम न कर सके। जब कभी नियति उसके अहं पर चोट करती है तो वह अपने अन्दर और अधिक आत्मविश्वास पैदा कर लेता है और उन चोटों को साहस पूर्वक सामना करने को तैयार हो जाता है। वह किसी भी प्रकार अपने आत्मविश्वास को डिगने नहीं देता है। व्यक्तित्व का विकास इन्हीं चोटों से होता है। इसलिए वह चोटें खाकर और अधिक तनकर, फैलकर खड़ा हो जाता है ताकि उसके आत्मविश्वास को कोई हिला न सके।

इसलिए कवि अपनी काव्य पंक्तियों में कहते हैं कि-

जब कभी अहं पर नियति चोट देती है,
कोई चीज अहं से भी बड़ी जन्म लेती है।

प्रश्न क्रमांक- 8

'रीति' का अर्थ है प्रणाली पद्धति, लक्षण शैली आदि रीति काल का समय संवत 1700 - 1900 तक माना

गया है।

रीतिकाल की तीन विशेषताएँ अग्रलिखित है-

रीतिकालीन विशेषताएँ

शृंगारिकता - इस काल में शृंगार रस का विधान अत्यधिक हुआ है। कवियों ने वाह-वाही लूटने के लिए शृंगार रस को अपने काव्य में प्रधानता दी, जिससे रीतिकालीन काव्य शृंगारिक होता चला गया।

चमत्कारिता- इस काल के कवि राजाओं के आश्रय में रहकर काव्य रचना करते थे। राजाओं से पुरस्कार पाने की अभिलाषा में कवि राज-दरबार के भोग-विलास का वर्णन करके काव्य में चमत्कार उत्पन्न करने का प्रयास करते थे।

ब्रज भाषा- इस काल में अधिकतर काव्य ब्रजभाषा में ही लिखा गया है। तथा सभी छन्दो, रसों का परिपाक रीतिकाल के काव्य में देखा जा सकता है।

रीतिकालीन कवि व रचनाएँ

कवि	रचना
पद्माकर	गंगा लहरी
केशवदास	रामचन्द्रिका

BSEMP

प्रश्न क्रमांक-10

देश हमारे लिए हमारा सबकुछ है। इसकी कोई भी वस्तु को यदि हानि या चोट पहुँचती है तो हमें यह समझना चाहिए कि, वह हमारी किसी वस्तु को चोट पहुँची है। परन्तु हमारे देश मे जनता देश के शक्तिबोध को बुरी तरह से हानि पहुँचा रही है। देश के शक्तिबोध को चोट निम्न तरीकों से पहुँचती है।

हमारे देश के निवासी सामूहिक रूप से देश की बुराई करते है।

देश में बनी हुई अव्यवस्थाओं को दूर करने के बजाय उन पर सामूहिक रूप से चर्चा करके ही अपनी इति श्री करते है।

अपने देश की तुलना अन्य देशों से करके, दूसरे देशों को श्रेष्ठ व अपने देश को हीन साबित कर देते है।

इस प्रकार देश के निवासी देश के शक्तिबोध को चोट पहुँचाते है। हमारे देश के निवासियों के इस खराब व्यवहार के कारण ही हमारा देश सभी क्षेत्रों में हमेशा पीछे रह जाता है। हमें अपने देश से प्यार

BSEMP

करना चाहिए और जो लोग ऐसा न करके देश के शक्तिबोध को चोट पहुँचाते है वे तो पशु है, मृतक के समान है। किसी ने कहा

जो भरा नही है भावो से,
बहती जिसमे रसधार नही।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नही॥

प्रश्न क्रमांक-11

'दीपक की आत्मकथा' पाठ से हमें सहनशील, संघर्ष करने व सच्चे नागरिक बनने की शिक्षा प्राप्त होती है। जिस प्रकार एक छोटा सा अपनी मिट्टी से अलग होने से लेकर अपनी पूर्णता तक विभिन्न प्रकार की बाधाओं का ~~सम~~ सामना करता है उसी प्रकार हमें भी अपने सामने आने वाली हर चुनौती का सामना साहस से करना चाहिए। हमारे जीवन में गतिशीलता हमेशा बनी रहनी चाहिए। जिस प्रकार एक दीपक स्वयं जल कर दूसरों को प्रकाश देता है, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन को परोपकार के कार्यों मे समर्पित कर देना चाहिए। हम दीपक

BSEMP

से एक सच्चा नागरिक किस प्रकार बना जा सकता है
इस बात की प्रेरणा ले सकते है। दीपक सहन
शीलता के गुणों का विकास अपने अन्दर
करके एक 'सच्चा दीपक' साबित होता है।
उसी प्रकार मानव भी अपने आत्मबल का विकास
करके अपने आप को देश को समर्पित कर
एक सच्चा नागरिक साबित हो सकता है। आज
हमारे देश को वीर, सहनशील, धैर्यवान,
संघर्षशील नागरिकों की आवश्यकता है। और
'दीपक की आत्मकथा' हम सबके लिए एक प्रेरणा
दायी आत्मकथा बनकर सामने आयी है जिससे
न केवल हम हमारे देश को बल्कि विश्व का
वातावरण शांतिमय बना सकते है दीपक हमें
परोपकारी बनने की प्रेरणा देते है हमारे ऋषि
मुनियों की तरह उसका भी भाव यही है-
'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया'
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दुख भाग्भवेत

प्रश्न क्रमांक - 14

कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'

दो रचनाएँ- माटी हो गई सोना,
क्षण बोले, कब मुस्कुराएँ

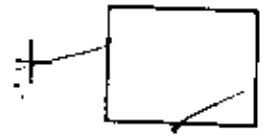

भाषा-शैली

प्रभाकर जी की भाषा सहज, सरल शुद्ध खड़ी बोली है। उनकी भाषा में संस्कृत निष्ठ शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है उनकी भाषा पाठकों को सहज रूप से समझ में आ सके, इस प्रकार की है। उन्होंने हिन्दी भाषा के शब्दों के साथ-साथ भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए अंग्रेजी व उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग किया है। साहित्यिकता के दर्शन उनकी रचनाओं में सहज रूप से ही हो जाते हैं। इस प्रकार भाषा शुद्ध परिमार्जित खड़ी बोली है। वाक्य विन्यास प्रभाकर जी का सुगठित है। शब्दों का चयन भी विषयानुरूप किया गया है इस प्रकार उनकी भाषा में गद्यात्मकता के दर्शन होते है

शैली- प्रभाकर जी ने ~~अनेक~~ विषयों के लिए अलग-अलग प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। जैसे-

भावात्मक शैली- जहाँ भाव-प्रधान विषय हो वहाँ इस शैली के सहज रूप से दर्शन हो जाते हैं

संवादात्मक शैली- 'प्रभाकर' जी ने रचनाओं में संवाद से प्रभाव उत्पन्न करने का भी प्रयास किया है। जहाँ संवादों की प्रधानता

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

+ =

हो, वहाँ इस शैली के दर्शन होते हैं

विचारात्मक शैली= 'प्रभाकर' जी ने केवल भावमय रचनाएँ ही नहीं अपितु विचार पूर्ण रचनाएँ भी की हैं। उनकी रचनाओं में जहाँ विचारों की प्रधानता होती है, वहाँ पर इस शैली का प्रयोग किया गया होता है।

इस प्रकार 'प्रभाकर' जी ने अलग-अलग विषयों के लिए अलग-अलग शैलियों का चुनाव किया है। इन शैलियों के प्रयोग ने रचनाओं को सहज, सरल सुशील बना दिया है।

साहित्य में स्थान= प्रभाकर जी ने जीवन-भर साहित्य साधना में लीन रहकर हिन्दी गद्य साहित्य को इतने सुललित ग्रंथ प्रदान किए हैं। वे केवल निबंधकार ही नहीं है, उन्होंने रिपोर्ताज विधा को भी खूब पल्लवित करने का प्रयास किया था। इस प्रकार मूर्धन्य साहित्यकारों में प्रभाकर जी का स्थान सर्वोच्च है।

BSFP

प्रश्न क्रमांक-15

तुलसीदास

दो रचनाएँ= विनय पत्रिका, रामचरित मानस

भावपक्ष: तुलसीदास जी युगद्रष्टा कवि है उनका सम्पूर्ण काव्य, उनके आराध्य भगवान श्री राम को समर्पित है। उन्होंने अपनी सभी रचनाओं मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र का चित्रण किया है। तुलसीदास जी कहते है कि "जिन्हें भगवान श्री राम एवं वैदेही पसंद न हो ऐसे प्रियजन त्यागने योग्य है"। उन्होंने श्री राम के लोकमंगल रूप को घर-घर तक पहुँचाया। उनका महाकाव्य रामचरितमानस आज अन्धकार में भटकते हुए करोड़ो हिन्दुओं के लिए एक ज्ञान-दीपक के समान प्रज्वलित हुआ है उन्होंने अपने काव्य में केवल श्री राम के गुणों को ही वर्णित करने का प्रयास किया है श्री राम के गुणों से जन-सामान्य को प्रेरणा लेना चाहिए इस उद्देश्य से उन्होंने भगवान राम के लोकमंगल रूप का भावमय अंकन अपने काव्य में करने का प्रयास किया।

कलापक्ष: तुलसीदास जी का कलापक्ष बहुत सशक्त है उन्होंने अवधी भाषा में अपने अधिकतर काव्यों की रचना की है अवधी के साथ-साथ फारसी, गुजराती ब्रजभाषा के शब्दों का समावेश भी उनके काव्य में देखा जा सकता है

सभी रसो का परिपाक बहुत ही उत्तम ढंग से उन्होंने अपने मै काव्य किया है उन्होंने अधिकतर प्रबन्ध काव्य में ही रचनाएँ की है

साहित्य में स्थान- तुलसीदास जी भक्तिकाल के राममार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि है उन्होंने अपने काव्य में दिखावटीपन लाने का कोई प्रयास नही किया है उनके ग्रंथ हिन्दी पद्य साहित्य के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए आधार ग्रंथ है तुलसीदास जी के बारे में कहा गया है कि-

कविता करके तुलसी न लसे,

प्रश्न क्रमांक - 16

साई _ _ _ _ _ _ _ _ जाय।

सन्दर्भ प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'नवनीत' के पाठ 'सामाजिक समरसता' के पाठ 'दोहावली' से अवतरित की गई है। इसके रचयिता निर्गुण प्रेममार्गी शाखा के कवि श्री कबीरदास जी है

BSEMP

प्रसंग — प्रस्तुत पद्यांश में कबीरदास जी ने ईश्वर से आवश्यकतानुरूप धन प्रदान करने की बात कही है।

अर्थ — कवि कहते है कि हे! ईश्वर मुझे मात्र इतना धन चाहिए, जिसमें मेरे सम्पूर्ण कुटुम्ब का पालन हो सके। और जो अतिथि या साधु पुरुष मेरे घर आये, वे भी खाली हाथ न जा सके। आशय यह है कि कबीरदास जी को मात्र गुजारे लायक धन की आवश्यकता है। अधिक की उन्हे चाह नहीं है।

B
S
E
M

विशेष — कबीरदास जी ने अपनी संतोषी वृत्ति को उजागर किया है।
शुद्ध साहित्यिक ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है।
छन्द - दोहा रस शान्त

*

प्रश्न क्रमांक - 17

कोई भी _ _ _ _ _ _ _ _ है।

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'नवनीत' के पाठ 'परम्परा बनाम आधुनिकता' से

माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश

अवतरित है। इसके लेखक श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं।

प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने बताया है कि आधुनिकता, परम्परा से भिन्न नहीं है।

अर्थ लेखक कहते है कि कोई भी नया विचार कहीं नई जगह से जन्म नहीं लेता है। उस विचार का मूल, उसकी जड़े परम्परा में ~~विद्~~ विद्यमान होती है कोई भी सुन्दर इस बात को नहीं कह सकता कि वह वृक्ष से अलग दिखता है, इसलिए वह उसका भाग नहीं है। कोई भी वृक्ष यह नहीं कह सकता कि वह मिट्टी से अलग है। अर्थात फूल व वृक्ष दोनों के निर्माण सामग्री मृदा ने ही उपलब्ध कराई है तो फिर ये दोनों उससे अलग हो, हो नहीं सकते। उसी प्रकार कोई भी आधुनिक विचार यह नहीं कह सकता है कि वह परम्परा से अलग है। उसे नया विचार बनाने व दुनिया के सामने लाने का आधार परम्परा ही है। परम्परा ने ही उसे नया विचार बनाया है। 'आधुनिकता' का आधार यह 'परम्परा' ही है। इससे अलग वह हो ही नहीं सकता है।

B S E M P

विशेष आधुनिकता का आधार परम्परा है।

शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली में विषय को प्रतिपादित किया गया है।

प्रश्न क्रमांक -18

उत्तर(क) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक- 'क्षमा का महत्व'।

B S E M

ख सारांश- पृथ्वी क्षमा-रूपी है। वीरों का भूषण क्षमा है। क्षमा के अभाव में क्रोध, हिंसा, संघर्ष का साम्राज्य छा जायेगा। क्षमा के अभाव में जीवन चलना दूभर हो जाता है। क्षमा मानव-जीवन के लिए एक अति महत्वपूर्ण गुण है।

क्षमा के अभाव में क्रोध, हिंसा, संघर्ष का साम्राज्य छा जाता है।

प्रश्न क्रमांक -13

निं० लि० वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए

) गौरव पुस्तक पढ़ो।

ख) क्या तुम वाराणसी में रहते हो?

उत्तर ब मैं आज भोजन नहीं करूँगा।
निषेधात्मक वाक्य

भगवान तुम्हें स्वस्थ रखे।
इच्छा वाचक वाक्य

(स)(क) जो ईश्वर पर विश्वास करता हो-
आस्तिक

जो कभी मरता नहीं है।
अमर

प्रश्न क्रमांक-12

उत्तर (अ) <u>खण्डकाव्य</u> खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक पक्ष या घटना का चित्रण होता है यह घटना वर्णन अपने आप में पूर्ण होता है इसमें किसी का आधिकारिक कथा का जुड़ाव नहीं होता है इस प्रकार "जीवन के किसी एक खण्ड का चित्रण जिस काव्य में किया जाता है उसे खण्डकाव्य कहते है

दो खण्डकाव्य - पंचवटी जयद्रथ वध

(ब) श्रीकृष्ण लगे।
उपर्युक्त पंक्तियों में 'रौद्र रस' है रौद्र रस' का स्थायी भाव 'क्रोध' है

JSEMP

प्रश्न क्रमांक-19

सेवा में,

श्रीमान प्राचार्य महोदयजी,
शान्तिनिकेतन ~~विद्यालय~~ उ० मा० विद्यालय,
देवास (म० प्र०)।

विषय- शाला छोड़ने का प्रमाण-पत्र हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,

सविनयनिवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा दसवीं 'अ' का नियमित छात्र हूँ। मेरे पिताजी का स्थानान्तरण देवास से भोपाल हो जाने के कारण मैं इस शाला में अध्ययन करने में असमर्थ हूँ।

अतः महोदयजी से निवेदन है कि मुझे शाला छोड़ने का प्रमाण-पत्र प्रदान करने की कृपा करें। मेरा कोई भी शुल्कबकाया नहीं रह गया है, एवं मैंने विद्यालय की सभी वस्तुएं लौटा दी है। 'अनापत्ती प्रमाण-पत्र भी इस पत्र के साथ संलग्न है।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारीशिष्य
अ. ब. स.
कक्षा- दशम

दिनांक-
5-03-2009

B S E M P

(21)

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 21 के अंक

प्रश्न क्रमांक- 20

अनुशासित छात्र-जीवन

	प्रस्तावना -
	अनुशासन प्राण लगाते है जीवन क
(1) अनुशासन का महत्व	संकटों के सामने तुम कभी भी,
(2) अनुशासन से लाभ	न हिचकना, न डरना।
(3) विद्यार्थी जीवन में	
अनुशासन	अनुशासन हमारे जीवन का प्राण है
व	इसके बिना जीवन सुचारु रूप से
	चल ही नहीं सकता है। अनुशासन
	को हम प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति
	में समाहित देखते है। समस्त
	प्रकृति अनुशासन बद्ध होकर

क्रियाशील रहती है सूरज, चाँद तारे सभी अपने कर्मों का पालन अनुशासित रहकर ही करते है। प्रकृति अनुशासन में है इसी कारण से इस धरती में जीवन है। यदि प्रकृति अनुशासित न होती तो हमारा जीवन भी संभव नहीं होता है। इसी कारण जीवन में अनुशासन के महत्व को स्वीकार किया गया है। समस्त प्रकृति की तरह छात्रों के जीवन

BSEMP

(6)

पृष्ठ के अंकों का योग

में भी अनुशासन की नितान्त आवश्यकता है।
अनुशासित छात्र-छात्राएँ ही भावी-जीवन की कर्णधार
है। अनुशासन दो शब्दों से मिलकर बना
'अनु + शासन' जिसका अर्थ है शासन के
नियमों का पालन करना या उन्हें आत्मसात
करना। अनुशासन दो प्रकार का होता है
आत्मानुशासन
बाह्यानुशासन
आत्म अनुशासन अन्दर से उत्पन्न होता है, और
यह अनुशासन ही व्यक्तित्व का विकास करता
है। बाह्य अनुशासन बाहरी नियमों को
पालन करने के डर से उत्पन्न होता है हम
सभी को अन्दर मे आत्मानुशासन का विकास
करना चाहिए अपने आप होने वाला
अनुशासन ही उत्तम होता है

अनुशासन से लाभ = अनुशासन हमेशा
लाभ ही होता है, हानि नहीं होती है अनुशासन
से नि० लि० लाभ होते है

व्यक्तित्व का विकास- अनुशासन से मनुष्य
का व्यक्तित्व निखरता है उसे अपना
विकास खुद ही होता नजर आता है

आत्मविश्वास की भावना- अनुशासन व्यक्ति मे
आत्मविश्वास की भावना का विकास कर

BSEMP

उसे हर परिस्थिति से लड़ने योग्य बनाता है इस प्रकार अनुशासन से आत्मविश्वास बढ़ता है

देश का विकास: जिस देश के निवासी जितने अनुशासन में रहकर कार्य करेंगे, उतना ही उनका देश विकसित व उन्नत देशों की श्रेणी में गिना जाएगा। अनुशासित जीवन होने से देश के विकास का लाभ हमें मिलता है।
इसी तरह और भी कई लाभ होते हैं जैसे, समय का सदुपयोग करने की भावना उत्पन्न होना। विद्याध्ययन में रुचि बढ़ना यह सब अनुशासन के ही लाभ होते हैं अतः हमें अनुशासित जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन: जब व्यक्ति की समृद्धि का आधार ही अनुशासन है तो विद्यार्थियों के लिए तो यह परम आवश्यक है। विद्यार्थी जीवन से ही अनुशासन की सीख मिलती है जो जीवन भर हमारे साथ रहती है। कहते हैं -

जिस घर में अनुशासन है,
वहाँ विद्या निवास करती है।
अनुशासन की सुगन्ध से,
जीवन की बगिया महका करती है

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

इस प्रकार विद्यार्थियों का जीवन बगिया के समान है और इस बगिया में अच्छे फूल पल्लवित होकर अपनी सुगन्ध बिखेरे इसके लिए अनुशासन परमावश्यक है। अतः अनुशासन को व्यवहार में उतारना है तो इसका अभ्यास विद्यार्थी जीवन से ही होना आवश्यक है।

वर्तमान में अनुशासनहीनता = आज हमारे देश मे चारों तरफ अनुशासनहीनता का बोल-बाला है सबसे अधिक अनुशासनहीन विद्यार्थी ही है जिससे हमारा समाज दूषित हो रहा है राजनीति में अनुशासनहीनता ने वैसे कि पैर ही वहाँ अंगद की तरह जमा लिए हो ऐसा आभास होता है जब देश के कर्णधार ही स्वयं अनुशासनहीन होंगे तो आम नागरिकों का क्या होना होगा यह हम सब सोच ही सकते हैं हमारे देश में फैली अनुशासनहीनता के कारण ही कई तरह की बुराईयाँ समाज में फैलती हैं अब वैसे भी हमारे देश में समस्याएं कम नहीं हैं और ऊपर से यह अनुशासनहीनता बाप रे बाप सारे समाज का वातावरण ही बिगाड़ के रख दिया है। कोई भी किसी बात सुनने को तैयार नहीं है लोगों को ज्ञान की बाते कहते जाओ वो चाहे बाते खुद ही सुन के आना पड़ता है ऐसी हालत हो चुकी है

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 5/3/09
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम हाइस्कूल परीक्षा
7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 5-3-2009

पृष्ठ

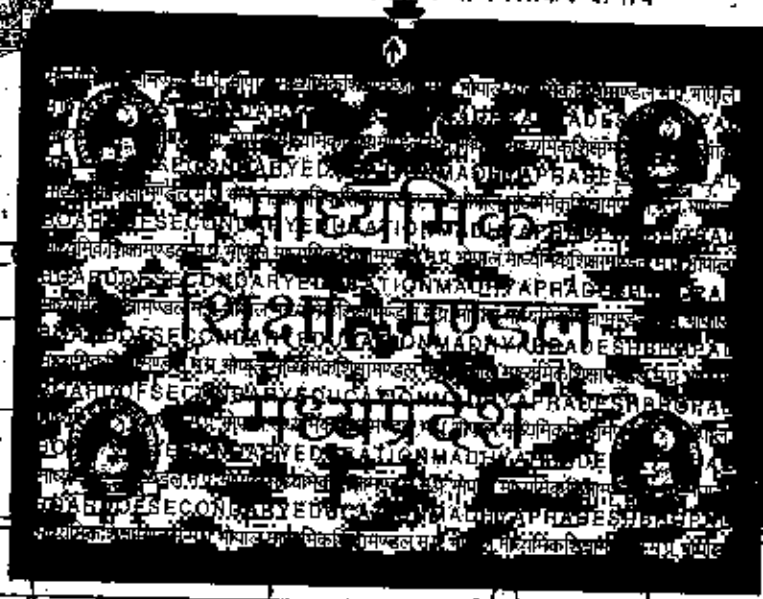

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश भोपाल
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

आज अनुशासनहीनता के कारण । छात्र-जीवन में अनुशासन कम मौज-मस्ती ज्यादा हावी रहती है हमें देश का भविष्य सुधारना है तो देश के छात्र को अनुशासन में करना होगा तभी देश सुधर सकता है।

अनुशासित छात्र-जीवन- जीवन की बगिया को महकाने मे अनुशासन की महत्वपूर्ण भूमिका है जैसा कि इस निबन्ध का विषय है अनुशासित छात्र-जीवन तो हम देखते है कि अनुशासन के लाभो से तो हम अवगत है। परन्तु फिर भी अनुशासन को अपनाते नही है आज का विद्यार्थी जानता है कि अनुशासित होने से क्या होता है परन्तु फिर भी अपने को अनुशासन मे नही ढाल पाता है अनुशासित छात्रो के उदाहरण तो हमे प्राचीन समय के छात्रो से उत्तम रूप मे मिल सकते है । उनका छात्र जीवन अनुशासित था इसी कारण उनका सम्पूर्ण जीवन सुखमय

बीत इसी प्रकार हम छात्रों के बारे मे भी सोच सकते है यदि वे अनुशासित हो जाएंगे तो उनका सम्पूर्ण जीवन कितना आनन्दमय हो जाएगा।

अनुशासनहीनता से बचने के उपाय-
हम उपाय तो नित्य प्रति दिन ही देखते सुनते पढ़ते है परन्तु उन उपायो को अमल मे लाना मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। हम प्रयासरत् है प्रयासरत है का नारा लगाने से कुछ भी नहीं होगा वैसा वास्तव मे करके दिखाना पड़ेगा।
विद्यालयों में अनुशासन की शिक्षा का प्रारम्भ करके बच्चों को नियंत्रित किया जाता है।
घर में माता-पिता ऐसा वातावरण निर्मित करले जिससे छात्र-जीवन अनुशासनहीन नहीं पाये। इसी प्रकार समाज व जन के सहयोग से ही अनुशासनहीनता मिट सकती है

उपसंहार- गुरु की महिमा हमारे ग्रंथों मे कही गई है, परन्तु आजकल गुरु अपने गुरु-धर्म का पालन करना भूल गए। जब गुरु भूल गए तो छात्रों का जीवन तो गर्त मे जाना ही है। इसलिए सर्वप्रथम गुरुओ से अपेक्षा है कि वे अपने जीवन मे

BSEMP

③

योग पूर्व पृष्ठ

अनुशासन लाए और छात्रों का जीवन अनुशासित करने का प्रयास करे। निष्कर्ष रूप में यही कहा जाएगा।
'गुरु कुम्हार है, शिष्य घड़ा है'
गुरु को कुम्हार की तरह ही अपने शिष्य के साथ व्यवहार करना चाहिए।

उत्तर क्रमांक- 9

रेखाचित्र व संस्मरण में अन्तर

रेखाचित्र	संस्मरण
रेखाचित्र का अर्थ है कम शब्दों में किसी वस्तु का वर्णन करना।	संस्मरण का अर्थ है सम्यक रूप से भली भाँति किसी के जीवन का वर्णन अपने शब्दों में करना।
रेखाचित्र में कल्पना तत्व की प्रधानता होती है।	संस्मरण किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित होने के कारण कल्पना युक्त नहीं होते हैं

रेखाचित्र व संस्मरण के लेखक व रचनाएँ
महादेवी वर्मा - अतीत के चलचित्र
अमृतलाल वेगड़ - नर्मदा की धारा

इस प्रकार रेखाचित्र व संस्मरण तटस्थ होते हुए भी, एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

\+ [ ] = [ ]

पृष्ठ 4 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग